# पृथ्वी का सर्वनाश करेगा बढ़ता प्रदूषण

**डॉ. महेश परिमल**

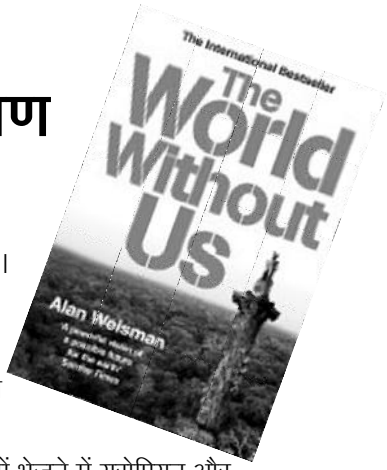


क्या आप जानते हैं कि आज सिंथेटिक पोलीमर्स और प्लास्टिक का पूरा एक अरब टन कचरा हमारी पृथ्वी पर पड़ा है। यही हाल रहा, तो समूची पृथ्वी पर संकट आ जाएगा। इसी के मद्देनज़र एक किताब प्रकाशित हुई है 'द *वर्ल्ड विदाउट अस*' यानी मानव विहीन दुनिया। इस पुस्तक को लिखा है महान पर्यावरणविद् एवं विज्ञान पत्रकार डॉ. एलन वाइसमैन ने।

इस किताब में उन्होंने आज के पर्यावरण को देखते हुए यह चेतावनी दी है कि प्राकृतिक रूप से यह पृथ्वी मानव विहीन हो जाएगी। उन्होंने कहा है कि आज मानव जिस तरह से आत्मविनाश की ओर बढ़ रहा है, उससे जो होगा, वह बहुत ही बुरा होगा। अपनी किताब को लिखने के लिए उन्होंने कई वर्षों तक जंगलों की खाक छानी है। यही नहीं, कई विद्वानों एवं पर्यावरणविदों से भेंट भी की है। वैसे द *वर्ल्ड विदाउट अस* तो खगोल शास्त्र की दृष्टि से लिखी गई है।

डॉ. वाइसमैन ने हमसे हमारी ही भाषा में पूछा है कि क्या पृथ्वी गंगास्वरूप हो जाएगी? पृथ्वी को अखंड सौभाग्यवती रखने की ज़िम्मेदारी हमारे हाथ में है। पर प्रकृति या ब्रह्मा अपना रौद्र रूप दिखाएं, उससे पहले हमें अपने स्वास्थ्य, खानपान या गलत आदतों को काबू में रखना होगा। यदि हमने परहेज़ करना शुरू नहीं किया, तो पृथ्वी का बुरी तरह से नाश होगा, इसे कोई रोक नहीं सकता। अपने पेट को कब्रिस्तान बनने से रोकना है। अपने शहर को ज़हर का कारखाना बनने से रोकना है। अपनी किताब में उन्होंने बार-बार चेताया है कि यदि इंसान ने अपनी प्रवृत्तियों को नहीं बदला, तो सर्वनाश निश्चित है।

डॉ. वाइसमैन ने चेतावनी दी है कि आज जिस तेज़ी से पेट्रोलियम पदार्थों का उपयोग हो रहा है, इसके पीछे कर्ज़ में मिलने वाले वाहन हैं। इस कारण लोग साइकिल से अधिक कार को महत्त्व दे रहे हैं। ऐसा ही होता रहा, तो पृथ्वी रसातल में चली जाएगी। पेट्रोल से चलने वाले वाहनों का उपयोग करने का आशय यही है कि हम अणु बम का इस्तेमाल कर रहे हैं।

वैसे धरती को रसातल में भेजने में युरोपियन और अमरीकी ही आगे हैं। डॉ. वाइसमैन कहते हैं कि भविष्य में मुंबई और न्यूयार्क जैसे शहरों के रास्ते, मकान और इमारतें उफनती गटर के पानी में पूरी तरह से डूब जाएंगे। मानव की इस करतूत के कारण वे स्वयं तो मरेंगे ही, पर चूहे और बंदर भी बच नहीं पाएंगे। किसी भी शहर की संरचना साबुत नहीं रहेगी। ज़मीन से जाने वाले वायर, पाइप आदि नष्ट हो जाएंगे।

इस पुस्तक को आधार बनाकर एक फिल्म भी बनी है। पूरी पृथ्वी किस तरह से जंगल जैसी और मानवरहित मैदान जैसी हो जाएगी, इसका वास्तविक चित्रण फिल्म में किया गया है। पुस्तक लिखने से पहले डॉ. वाइसमैन इंग्लैण्ड, साइप्रस, तुर्की, पनामा और कीन्या गए। उत्तर कोरिया पर जब अमरीका ने हमला किया, उसके बाद धरती किस तरह से उजाड़ मैदान जैसी बनी है, इसका चित्रण शब्दों के माध्यम से डॉ. वाइसमैन ने किया है।

पूरी दुनिया किस तरह प्लास्टिक के कचरे के कारण विषाक्त हो जाएगी, इसकी कल्पना की गई है। उनका समर्थन करते हुए पर्यावरणविद् विलियम राथजो ने कहा है कि मानव को अब मरने के लिए किसी दूसरे ज़हर की आवश्यकता नहीं है। तेल रिफाइनरी, प्लास्टिक और तरह-तरह के रसायन ही उसे मार डालने के लिए पर्याप्त हैं। मानव अब इससे बच ही नहीं सकता, ऐसा वे नहीं कहते। मानव के अभी भी बच जाने की गुंजाइश बची है। उनका मत है कि जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

विश्व की तमाम आर्थिक पत्रिकाओं ने इस किताब की

समीक्षा लिखी है। इसमें केवल बिगड़े पर्यावरण की ही बात नहीं की गई है, बल्कि मानव जाति के इतिहास का भी समावेश किया गया है। वृक्षों की छाल को वस्त्र के रूप में उपयोग में लाकर फलादि खाकर जीवित रहने वाला इंसान आज प्लास्टिक को राक्षस की तरह खा रहा है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद दुनिया एक अरब टन सिंथेटिक पोलीमर्स और प्लास्टिक से परिपूरित है। इससे अब हमारे समुद्र भी अछूते नहीं रहे। जिस तरह से समुद्री प्रदूषण बढ़ रहा है, उसे देखते हुए अब मछलियां केवल एक्वेरियम में देखने को मिलेंगी। आप ही सोचें, हम सबको भूल सकते हैं, विलियम शेक्सपियर को भूल सकते हैं, महात्मा गांधी को भूल सकते हैं, विवेकानंद को भूल सकते हैं, स्वामी रामकृष्ण परमहंस को भूल सकते हैं, पर यदि कोई मानव जाति को ही भूल जाए तो? रबर और पेट्रोलियम का कबाड़ ही बाकी रहेगा इस दुनिया में।

पुस्तक के अंत में लेखक ने भारतीयों से यह आशा रखी है कि वे पृथ्वी को बचाने में अपना अभूतपूर्व योगदान देंगे। भारतीय इतने सक्षम हैं कि वे शिव की तरह ज़हर को भी पचा लेंगे। हम सबके पास अभी आधी सदी शेष है। यही समय है, जब हम पर्यावरण को समझें, पेड़-पौधों से बात करें, उनकी पीड़ा को जानें, उनकी समस्याओं को हल करें, उनसे पूछें कि उन्हें क्या तकलीफ है, उनके लिए हम क्या कर सकते हैं? तभी प्रकृति संभल पाएगी।

अंत में पवन देव से आग्रह है, पवन तू बहता रहे, तेरे दिव्य संगीत को हम सुनते रहें, हमारी कोशिश होगी कि हम अपनी पूरी शक्ति से पर्यावरण को बचा कर रखें। तू बहना मत छोड़ना। हमारा वादा है हम पर्यावरण को शुद्ध रखने में पूरा ज़ोर लगा देंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***